Pada 17 (NPS 76)

अंत कै द्यौंस कहैगे रांम ।
मात पीता बंध हौ लगि । जौ लगि जिन कै कांम ।। टेक
आषि अस्त रुधिर तन । जौ लगि देषत कोमल चांम ।
तौ लग कौं संसार गौ सब । ताभौ लैहि न नांम ।। १
इतनौ जांनत है मन मूरिष । मांनत ही है धांम ।
छाडि न गहत सूर सठ भैडि । ब्रह्मादिक कौं नांम ।। २

सटीक 76

(जीवन के) अंतिम दिनों में श्री कृष्ण ही साथ देते हैं। माता, पिता, भाई और बेटे तभी तक साथ देंगे जब तक जिसका काम रहेगा। जब तक मांस, खून और हड्डी अंगों में हैं तभी तक यह चमड़ा कोमल है। यह संसार तभी तक अपना प्रतीत होता है जब तक व्यक्ति ईश्वर का नाम नहीं लेता। यदि मूर्ख मन यह जानता, तो क्या इस (संसार) को अपना घर समझता ? सूर कहते हैं कि तब वह संसार का सारा डर -भय त्यागकर वृन्दावन में अपना घर बनाता।